इकाई 10 खेलकूद में फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 खेल–फीचर का अभिप्राय

10.3 खेल–फीचर के प्रकार

- 10.3.1 खेल आधारित
- 10.3.2 खिलाड़ी आधारित
- 10.3.3 प्रतियोगिता आधारित
- 10.3.4 अन्य खेल फीचर

10.4 विषय का चयन

- 10.4.1 रुचि और विशेषज्ञता
- 10.4.2 प्रकाशन की प्रकृति
- 10.4.3 विषय की प्रासंगिकता

10.5 सामग्री का संकलन

- 10.5.1 विषय पर शोध
- 10.5.2 तथ्यों का संकलन
- 10.5.3 फोटो
- 10.5.4 साक्षात्कार
- 10.5.5 अन्य स्रोत

10.6 सामग्री का संयोजन और संपादन

10.7 फीचर का लेखन

- 10.7.1 आरंभ
- 10.7.2 मध्य
- 10.7.3 अंत और शीर्षक
- 10.7.4 भाषा और शैली

10.8 शब्दावली

10.9 सारांश

10.10 बोध प्रश्नों / अभ्यासों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

सृजनात्मक लेखन में फीचर एक ऐसी आकर्षक विधा है, जिसे अब लेखन के हर क्षेत्र में प्रयोग में लाया जा रहा है। भारत में खेल पत्रकारिता का इतिहास बहुत पुराना नही है किंतु 'फीचर विधा' ने इसे भी आकर्षक और प्रभावी बना दिया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- खेल फीचर का क्या अभिप्राय है, यह बता सकेंगी/सकेंगे;
- उसके प्रकारों का उल्लेख कर सकेंगी/सकेंगे;
- खेल फीचर लिखने के लिए विषय का चयन कर सकेंगी/सकेंगे;
- फीचर से संबधित सामग्री का संकलन कर सकेंगी/सकेंगे;
- सामग्री का उचित प्रयोग, संयोजन और संपादन कर सकेंगी/सकेंगे; और
- खेल फीचर में अपना कौशल बढ़ा सकेंगी/सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

यह कोई बहुत पुरानी बात नहीं है कि अपने देश के खेलों से जुड़े युवाओं को बहुत अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था। खेल केवल राजाओं और नवाबों या कुछ विशेष क्लबों की देख–रेख में ही होते थे। व्यवस्थित रूप से न सरकार की ओर से खिलाड़ियों को कोई प्रोत्साहन था और न ही घरों में माता–पिता की ओर से। माता पिता की दृष्टि में खेलों से जुड़ने में समय की बर्बादी के साथ–साथ शिक्षा पर भी असर पड़ता था। लेकिन अब स्थिति बदली है। अब घरों से लेकर शहर और देश में खिलाड़ियों को सम्मान से देखा जाता है। क्रिकेट और टेनिस के खिलड़ियों को फिल्मी सितारों जैसी लोकप्रियता मिल रही है। सरकार की ओर से भी प्रोत्साहन मिल रहा है और अर्थ प्राप्ति के द्वार भी खुले हैं।

खेलकूद के प्रति इस बदलते हुए माहौल से खेल–पत्रकारिता को भी नया जीवन प्राप्त हुआ है। आज खेल–परिणामों के अतिरिक्त विस्तृत लेख भी खेल–प्रेमियों की भूख मिटाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। अतः अब पत्र–पत्रिकाओं में खेल–फीचर को स्थान दिया जा रहा है। फीचर लेखन का वह निखरा हुआ रूप है जिसमें कुल मिलाकर दिलचस्पी के सभी सामान जुटाये जाते हैं।

खेल फीचर लिखने के लिए आपको क्या तैयारियाँ करनी होंगी? अच्छे फीचर लेखन में कौन–से गुण सहायक होंगे? विषय–चयन से लेकर सामग्री संकलन और उसके संपादन तक आपको किन परिस्थितियों से गुजरना होगा, इन सबकी चर्चा इस इकाई में की जा रही है जिसे पढ़कर आप दिलचस्प खेल फीचर लिखने में कामयाब हो सकते हैं।

10.2 खेल–फीचर का अभिप्राय

खेल फीचर से अभिप्राय खेलों पर लिखे जाने वाले फीचर से है किंतु इनके आलेख तैयार करने से पहले खेल फीचर से पूरा परिचय आवश्यक है। फीचर, लेखन की एक आकर्षक शैली है और खेलों के संदर्भ में जहाँ कि आँकड़े महत्वपूर्ण होते हैं और

उनकी भरमार रहती है इस शैली को अपनाना अभ्यास और निपुणता पर अधिक निर्भर है। कहने का तात्पर्य यह कि खेल संबंधी किसी विषय पर सजा–संवार कर लिखे गए आलेख को खेल फीचर कहते हैं। इसमें निम्नलिखित तत्व महत्वपूर्ण हो सकते हैं :

- जानकारी / समाचार
- तथ्य
- तारतम्यता
- सम्बद्धता
- आकर्षक भाषा–शैली

खेल–जगत में तात्कालिक समाचारों का महत्व सबसे अधिक होता है। खेलों के परिणामों को तुरंत जानने की उत्सुकता के कारण ही रेडियो और दूरदर्शन की खेल–सेवाएं आज इतनी लोकप्रिय हो रही हैं। किंतु समाचारों के बाद लेख की महत्ता होती है, कारण है, विस्तारपूर्वक समाचार सहित विवरण और महत्वपूर्ण आँकडों का अधिक ब्यौरा। किंतु लेखों से भी अधिक महत्वपूर्ण, आकर्षक और स्थायी होते हैं 'फीचर' जिनमें लेख की विशेषताएँ तो होती हैं, लेखक की अपनी शैली और जुड़ाव अतिरिक्त गुण होते हैं जो फीचर पढ़ने के लिए हमेशा उकसाते हैं। इसीलिए आज खेल फीचर को दैनिक समाचार–पत्रों से लेकर साप्ताहिक और मासिक या खेल पत्रिकाओं में स्थान दिया जा रहा है।

जहाँ तक खेल की बात है, आज इसका अर्थ केवल किसी दैनिक या किसी स्थान पर खेले गए किसी विशेष खेल से ही नहीं रह गया है वरन् इसका अर्थ अब व्यापक हो गया है। खेल शब्द के दायरे में जो लोग और स्थान जुड़ते हैं, वे हैं :

1) विशेष खेल
2) विशेष खिलाड़ी
3) खेलों की गतिविधियों से जुड़े अन्य लोग, जैसे–कोच, मैनेजर, अम्पायर, खेल कमेंटेटर, खेल समीक्षक आदि।
4) विभिन्न खेलों से जुड़ी प्रतियोगिताएँ, जैसे–रणजी ट्राफी, चैम्पियन्स ट्राफी, डेविस कप, विम्बलडन, एशियाई खेल और ओलम्पिक खेल आदि।

उपर्युक्त सभी विषयों पर खेल फीचर तैयार हो सकते हैं। कुछ अन्य विशेषताएं जो खेल फीचर में होती हैं, वे हैं।

- खेलों की अपनी शब्दावली होती है, जैसे–रन, मेड़–इन, गली, स्लिप, पेनाल्टी, कॉर्नर, पेनाल्टी स्ट्रोक, फ्री हिट आदि।
- विशिष्ट समीक्षात्मक दृष्टिकोण (समाचार को अपने दृष्टिकोण से देखना होता है)
- तुलनात्मक आँकड़े।

10.3 खेल–फीचर के प्रकार

खेलों का संसार बहुत व्यापक है। तरह–तरह के खेल और उनसे जुड़ी सैकड़ों तरह की प्रतियोगिताएं, उनसे जुड़े हजारों खिलाड़ियों, आदि के बारे में जानना आसान काम नहीं है। इसलिए बेहतर यही है कि इस क्षेत्र में लेखन से पहले हम यह तय कर ले

कि हमें किन–किन खेलों के लेखन में सक्रिय होना चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर हम यहाँ खेल फीचर के विभिन्न प्रकारों पर विचार करेंगे। इसे हम मुख्यतः चार भागों में विभक्त कर सकते हैं :

- खेल–आधारित
- खिलाड़ी–आधारित
- प्रतियोगिता–आधारित
- अन्य खेल फीचर

10.3.1 खेल–आधारित

फीचर के लिए इस प्रकार का चयन बहुत आसान है क्योंकि कई तरह के खेल खेले जाते हैं–कबड्डी, फुटबॉल, टेनिस, हॉकी, क्रिकेट, वालीबॉल, बास्केटबॉल, बिलियर्ड, गोल्फ, शतरंज, कुश्ती, बैडमिंटन आदि किसी भी खेल का चयन किया जा सकता है और उन पर फीचर लिखा जा सकता है। सीधे खेल से संबंधित फीचर होने के कारण इसे खेल–आधारित फीचर कहेंगे। अब खेल–आधारित फीचर लिखने के कौन से तरीके हो सकते है, यह जान लेना जरूरी है। लेखन में आपकी पैनी नजर और खेल संबंधी जानकारी मदद करती है। कुछ क्षेत्र हैं, जिन पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है, जैसे :

- खेल के नियम
- खेल का इतिहास
- खेल से जुड़ी सामग्री
- खेल तकनीक
- अच्छा खेल कैसे खेलें
- खेल की लोकप्रियता

'कितना पैसा है फुटबॉल **में'** शीर्षक से 24 जून, 1990 के साप्ताहिक हिंदुस्तान में जसमिदंर लिखित फीचर की ये आरंभिक पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं –

''इसमें कोई शक नहीं है कि लोकप्रियता के मामले में फुटबॉल विश्व का पहले नम्बर का खेल है। जो कुछ खास कारण इसे विश्व का सबसे लोकप्रिय खेल बनाते हैं, उनमें से एक यह है कि खेलने में यह बेहद सस्ता खेल है। बस समझ लीजिए कि अगर फुटबॉल पास में हो तो भी खेल शुरू हो सकता है, न किसी मंहगे उपकरण की जरूरत और न किसी खास तरह के स्टेडियम की ज़रूरत।''

इन पंक्तियों में फुटबॉल की सहजता और सरलता को फीचर शैली में लिखा गया है।

किसी विशेष मैच या मुकाबले को भी खेल–आधारित फीचर के अंतर्गत रखा जा सकता है। नीचे एक उदाहरण देखें, जिसे मनोज चतुर्वेदी लिखित **'इस जीत का कैसा जश्न'** शीर्षक फीचर से लिया गया है –

''जिंबाब्वे टीम की इस समय जो स्थिति है उसे देखते हुए भारतीय क्रिकेट टीम के 2–0 से टेस्ट सीरीज जीतने को बहुत महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता है। फिर भी जीत तो जीत ही है और इसके श्रेय से भारतीय टीम को वंचित करना उचित नहीं

होगा। वैसे भी भारतीय टीम ने उप महाद्वीप के बाहर 11 साल बाद सीरीज जीती है। पर हर सीरीज के कुछ सकारात्मक और कुछ नकारात्मक पक्ष होते हैं इसके भी हैं।

इस सीरीज का सबसे सकारात्मक पक्ष कोच ग्रेग चैपल का टीम पर पूरा नियंत्रण बनाना है। इससे पहले होता यह था कि टीम के वरिष्ठ खिलाड़ी कोच को भाव नहीं दिया करते थे और यह सिलसिला जॉन राइट के समय से चलता रहा है। कई मौकों पर तो खिलाड़ियों ने कोच को नीचा दिखाने तक का प्रयास किया है। लेकिन ग्रेग चैपल का खुद का कद बहुत ऊंचा है और वे एक पेशेवर की तरह ही काम कर रहे हैं। वे अपनी बात को सख्ती के साथ रख रहे हैं। पर उनके प्रयास तभी अच्छे परिणाम दे सकते हैं, जब बोर्ड की तरफ से उन्हें पूरी छूट मिली रहे। इस स्थिति में 2007 के विश्व कप तक एक मजबूत टीम खड़ी हो सकती है। इस दौरे का सबसे नकारात्मक पक्ष भी ग्रेग चैपल के काम करने की शैली के कारण ही उपजा है। उनका कप्तान सौरव गांगुली को पहले टेस्ट की पूर्व संध्या पर टीम से बाहर बैठने की सलाह देना और फिर गांगुली द्वारा शतक जमाने के बाद इसका रहस्योद्‌घाटन करने से जबरदस्त विवाद का रूप ले लिया। इस विवाद का टीम के मनोबल पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। बोर्ड के हस्तक्षेप से लगा कि मामला सुलट गया है, पर ग्रेग चैपल द्वारा गांगुली को लेकर बीसीसीआई अध्यक्ष रणबीर सिंह महेंद्रा को भेजे ई–मेल ने आग में घी का काम किया है। उन्होंने लिखा है कि गांगुली शारीरिक और मानसिक तौर पर अंतरराष्ट्रीय मैचों में खेलने लायक नहीं हैं। उन्हें जिस तरह से ट्रेनिंग करने को कहा जाता है, नहीं करते हैं। उन्होंने टीम के अनुशासन को खराब किया और टीम में फूट डाल रहे हैं। वैसे तो बोर्ड अध्यक्ष ने इस ई–मेल की पुष्टि नहीं की है पर यह बात सही है तो इसे टीम के हित में कतई नहीं कहा जा सकता है।''

(सहारा समय, 1 अक्टूबर 2005)

इस फीचर में सभी पक्षों पर उचित ध्यान दिया गया है।

10.3.2 खिलाड़ी आधारित

विभिन्न खेलों से जुड़े खिलाड़ियों को भी आप फीचर का विषय बना सकते हैं। इनमें उस खिलाड़ी से जुड़े विवरण से लेकर उससे जुड़े वाद–विवाद को दर्शाया जा सकता है। जरूरी नहीं कि खिलाड़ी लोकप्रिय और प्रतिष्ठत ही हों। नए और उभरते हुए खिलाड़ियों को भी लिया जा सकता है। **'खेल हलचल'** पत्रिका में प्रकाशित **'उभरते हुए सितारे'** फीचर का यह अंश देखिए –

''बारह वर्ष से कम उम्र के खिलाडियों में रोहित को गेंदबाजी करते हुए जिसने भी देखा है, उसे इंग्लैंड के महान तेज गेंदबाज फ्रेडी टूमेन की याद आना लाजमी है। रोहित तगड़े–ऊंचे कद के हैं और उनकी गति अत्यधिक तेज है। हाल ही में मद्रास में सम्पन्न हुई स्कूल की न्यूट्रीन स्पर्धा में रोहित ने डॉन बास्को स्कूल का नेतृत्व किया था। यही नहीं, मद्रास का नेतृत्व करते हुए रोहित ने संयुक्त जिलों की टीम को पराजित किया था।''

एक अन्य उदाहरण में टेनिस खिलाड़ी **बोरिस बेकर** का जिक्र इस तरह है :

''बेकर शुद्ध रूप से एक आक्रामक खिलाड़ी हैं– प्वाइंट बनाने के बाद और पहले भी। कोई भी प्रतिस्पर्धा हो वे साहसपूर्वक डटे रहते हैं। अंतिम मैच में केविन के विरुद्ध

कोर्ट बदलते हुए करेन से कंधा भिड़ाकर वे चलते थे। भविष्य में बोरिस बेकर लगता है कई गुल खिलाएंगे।''

किसी खिलाड़ी पर फीचर लेखन से पूर्व जो जानकारी और समीक्षात्मक दृष्टि उपयोगी हो सकती है, उनमें मुख्य हैं :

- खेल के प्रति खिलाड़ी का समर्पण
- उसका खेल, उसकी शैली
- उसका पूर्व इतिहास
- उससे भविष्य की आशाएँ
- अन्य खिलाड़ियों से उसकी तुलना
- उसके अन्य शौक और पारिवारिक विवरण
- उसका स्वभाव
- अन्य कोई विशेषता

एक उदाहरण देखें। इसे मनूभाई लिखित **'राष्ट्रीय शतरंज चैम्पियन वर्गीज़ कोशी'** से लिया गया है –

''कोई अजनबी वर्गीज कोशी के कमरे में चला जाए तो किताब में डूबी दाढ़ी वाली उस आकृति को देखकर उसे यही लगेगा कि किसी प्रोफेसर के पास आ गया है। राष्ट्रीय शतरंज चैम्पियन वर्गीज कोशी आज भी एक शोधकर्ता की तरह शतरंज विषयक पुस्तकों का नित्य घंटों अध्ययन करते हैं। अन्य खिलाड़ियों के लिए शतरंज एक पेशा या शौक हो सकता है परंतु कोशी के लिए जीवन है। उनका कहना है कि शतरंज के खिलाड़ी को इस खेल के विकास के लिए कुछ न कुछ योगदान करना चाहिए। स्वयं वर्गीज ने इस पर किस हद तक अमल किया, उसका अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके जमशेदपुर आने के बाद यहाँ प्रतिवर्ष सात–आठ शतरंज के टूर्नमेंट होने लगे हैं।''

10.3.3 प्रतियोगिता आधारित

आपके अपने जिले से लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल प्रतियोगिताएं आयोजित होती रहती हैं। ओलम्पिक खेल, विश्व कप क्रिकेट, विश्व कप फुटबॉल, विश्व कप हॉकी, विम्बलडन, फ्रेंच ओपन आदि कुछ प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं हैं। इनमें से विभिन्न प्रतियोगिताएँ दो–दो और चार–चार वर्षों के अंतराल से आयोजित होती हैं। विभिन्न राष्ट्र इनके आयोजन का दायित्व और जिम्मेदारी संभालते हैं और आयोजनों को इस भव्य पैमाने पर करते हैं कि मेला–सा लगता है। इनके अतिरिक्त हमारे अपने देश में भी खेलों की विभिन्न लोकप्रिय प्रतियोगिताएँ हैं–राष्ट्रीय हॉकी, डूरेंड कप फुटबॉल, रणजी ट्रॉफी (क्रिकेट), दिलीप ट्रॉफी (क्रिकेट), आगा खान कप (हॉकी) आदि। इन प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन करने पर खिलाड़ियों के राष्ट्रीय टीमों में चुने जाने की संभावना बढ़ जाती है। इनके अतिरिक्त, राज्य और जिला स्तरों पर भी विभिन्न खेलों की प्रतियोगिताएँ आयोजित होती रहती हैं। आप इनमें से किसी प्रतियोगिता पर फीचर लिख सकते हैं। ऐसे फीचर या तो प्रतियोगिता आरंभ होने से पूर्व लिखे जा सकते हैं या प्रतियोगिता के दौरान। आलेख में मुख्य बिंदु होंगे :

- प्रतियोगिता का इतिहास

- पिछले रिकॉर्ड
- होने वाली प्रतियोगिता की तैयारियाँ
- होने वाली प्रतियोगिता में मुकाबलों और संघर्ष की संभावनाएँ आदि।

किसी विशेष प्रतियोगिता की समाप्ति पर भी फीचर तैयार किया जा सकता है, ऐसी स्थिति में आपको जिन बिंदुओं पर ध्यान देना होगा, वे हैं :

- प्रतियोगिता का पैमाना
- कितने खिलाड़ियों और कितनी टीमों ने भाग लिया।
- टीमों और व्यक्तिगत खिलाड़ियों के उल्लेखनीय प्रदर्शन
- रोमाचंक स्थितियाँ और परिणाम
- संपूर्ण प्रतियोगिता में खेल स्तर
- भविष्य में प्रतियोगिता के आयोजन और उसकी संभावनाओं पर विचार।

नीचे दिया गया उदाहरण देखिए जिसमें किसी प्रतियोगिता पर लिखे फीचर की शैली का अंदाजा होता है–

''विम्बलडन के दर्शकों के दुख का अंतिम वर्ष 1967 था। लेकिन आस्ट्रेलिया ने एक बार फिर दिखा दिया कि उनके पास अपार उभरती प्रतिभा सुरक्षित है। सिडनी के तेईस वर्षीय जॉन न्यूकांब विश्व के महान एमेचर खिलाड़ी बनकर सामने आए। शक्तिशाली और सुंदर व्यक्तित्व वाले न्यूकांब ने सुनहरा प्रदर्शन कर पश्चिम जर्मनी के अठाईस वर्षीय विल्हेम बर्गट को 6–3, 6–1, 6–3 से हराकर निराशाजनक फाइनल को जीता। बर्गट फाइनल में अपने को स्थिति के अनुरूप नहीं ढाल पाए। बॉबी विल्सन, बोमज कोच और राजर टेलर तीनों ही खिलाड़ियों को पाँच सेटों में मात देकर फाइनल में पहुँचने वाले बर्गट पहले जर्मन खिलाड़ी बने थे।''

प्रतियोगिता पर लिखे फीचर में तुलनात्मक दृष्टि और समीक्षात्मक पकड़ होना जरूरी।

दसवें राष्ट्रीय महिला खेल कोयंबटूर में आयोजित हुए थे, उन पर लिखे इस उदाहरण से बात और स्पष्ट होगी –

''वॉलीबॉल और बास्केटबॉल के स्वर्ण पदक तमिलनाडु ने हथियाये। हैंडबॉल और हॉकी के खिताब कर्नाटक ने जीते। हैंडबॉल की सुपरलीग में कर्नाटक और महाराष्ट्र के अंक थे। किंतु बेहतर गोल औसत के कारण कर्नाटक की लड़कियाँ स्वर्ण ले उड़ी। हॉकी में कर्नाटक ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करके स्वर्ण पदक पाया। लीग कम नॉक आउट के आधार पर खेले गए हॉकी मुकाबलों में कर्नाटक ने अंतिम मुकाबले में केरल को 5–1 से हराया।''

10.3.4 अन्य खेल फीचर

खेल, खिलाड़ी और किसी प्रतियोगिता से हटकर भी कई ऐसे विषय हो सकते हैं जो खेल फीचर के अंतर्गत आते हैं। स्पष्ट है कि इनका प्रत्यक्ष न सही, अप्रत्यक्ष रूप से खेलों से संबंध होता है। ऐसे कुछ विषय हो सकते हैं :

- किसी खेल मैदान, स्टेडियम पर आधारित
- किसी खेल कमेंटेटर, खेल पत्रकार पर आधारित

- खेल प्रशिक्षक, खेल अधिकारी पर आधारित
- किसी अम्पायर, रैफरी या निर्णायक पर आधारित
- खेलों से जुड़े दर्शक, श्रोता, पाठक या किसी स्थान विशेष पर आधारित ।

उदाहरण के लिए, दिल्ली जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम पर एक फीचर तैयार किया जा सकता है। क्रिकेट के मैदानों और स्टेडियम को लेकर विभिन्न फीचर लिखे गए जैसे लॉर्डस, लीड्स, फीरोजशाह कोटला, ग्रीन पार्क आदि। क्रिकेट में मैदानों पर 'पिच' बड़ी मेहनत से तैयार की जाती है और खेल का दारोमदार बहुत कुछ 'पिच' की मेहरबानी पर रहता है। अब तक खेलों में पत्रकार या खेल कमेंटेटर के सहयोग को नकारा जाता रहा है जबकि खेल की भव्यता और खेल में चाहे व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से निखार लाने में इन व्यक्तियों का बड़ा योगदान होता है। खेल पत्रकार समीक्षक की पैनी नज़र रखता है। वह खिलाड़ियों को सही समय पर पहचानता है, अपने प्रयासों से प्रोत्साहन देता है। यह नहीं भूलना चाहिए कि सही समय पर खिलाड़ी को मिला प्रोत्साहन ही उनका उचित पुरस्कार होता है। यही कार्य खेल प्रशिक्षक और खेल मैंनेजर भी करते हैं। प्रशिक्षक तो खेल से पूर्व और विभिन्न खेलों में खेल के समय भी (जैसे वॉलीबॉल में) तकनीक को समझाने वाला होता है। किंतु हाँ, सबमें सभी को महारत हासिल नहीं हो सकती। इसलिए ऐसे सही नामों का चयन पहले आवश्यक है जिनके पास अपना अनुभव हो। खेल समीक्षक और कमेंटेटर में जसदेव सिंह, नरोत्तम पुरी, खेल प्रशिक्षक में पी.टी. उषा के प्रशिक्षक नॉबियार पर अच्छे फीचर लिखे गए हैं। इसी प्रकार खेलों को सही रूप से संचालित करने में अंपायर, रैफरी और निर्णायकों का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान होता है। उदाहरण के लिए, अम्पायर स्वरूप सिंह को तो उनकी सेवाओं के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार पद्मश्री से सम्मानित किया गया। निर्णायकों की जीवनी, उनके अनुभव और उनकी अपनी टिप्पणियों पर भी लिखे जा सकते हैं। जो निश्चित रूप से खेलकूद को बढ़ावा देने में कारगर साबित होंगे।

इसी प्रकार दर्शक या श्रोता या पाठक यदि खेलों में दिलचस्पी न लें, खिलाड़ियों की चर्चा न करें, उन्हें प्रोत्साहन न दें तो खेलों से जुड़ा मनोरंजन एकतरफा होकर रह जाएगा जो नीरस भी होगा। आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं एक ऐसा मैदान पर जहाँ बड़े–बड़े खिलाड़ी खेल रहे हों और दर्शक न हों, वहाँ वह खेल कितना सूना लगेगा, फिर चाहे वहाँ बड़े–बड़े रिकॉर्ड ही क्यों न बन रहे हों। दर्शकों के बीच छोटे स्तर के खिलाड़ियों का खेल भी महत्वपूर्ण हो उठता है। फीचर के लिए इनको भी विषय बनाया जा सकता है। उनके अनुभव, उनकी प्रतिक्रियाएं इसका आधार हो सकती हैं। दो खिलाड़ियों के खेल को सामने रखते हुए तुलनात्मक फीचर भी लिखा जा सकता है। उदाहरण के लिए **1 अक्टूबर, 2005 के 'सहारा समय'** में प्रकाशित मनोज चतुर्वेदी के फीचर **'बेहतर कौन, युवराज या कैफ'** को देखा जा सकता है।

''युवराज सिंह और मोहम्मद कैफ दोनों को ही क्षमतावान क्रिकेटर माना जाता है और हो सकता है कि भविष्य में कभी इनमें से कोई भारतीय टीम का नेतृत्त्व करे। लेकिन दोनों ही लगभग पांच साल पहले भारतीय टीम में स्थान बनाने के बाद भी टेस्ट टीम में स्थान पक्का नहीं कर सके हैं, अभी पिछले दिनों बुलवाया टेस्ट और फिर हरारे टेस्ट की टीम में युवराज को शामिल किया गया, तो चर्चा चली कि कैफ टीम में स्थान बनाने के हकदार थे और उनके साथ ज्यादती हो गयी। सच तो यह है कि कोच ग्रेग चैपल और कप्तान सौरव गांगुली के बीच हुए विवाद की वजह से भी इन्हें

खिलाना ही था। यह विवाद तो सुलट चुका है, अभी यह तय नहीं हो सका है कि युवराज और मोहम्मद कैफ में कौन ज्यादा क्षमतावान है और खेलने का सही हकदार कौन था। पर इन दोनों को ही नहीं खिलाने से हो सकता है कि इनका अपनी क्षमता पर से ही विश्वास हट जाए। इस संबंध में कोच ग्रेग चैपल के सहायक इयान फ्रेजर की यह टिप्पणी सटीक लगती है– 'कुछ खिलाड़ी अपनी क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन इसलिए नहीं कर पाते हैं, क्योंकि उन्हें सही समय पर मौका नहीं मिल पाता है।

युवराज और मोहम्मद कैफ का स्वभाव भले ही बिल्कुल भिन्न है पर दोनों ही पूरी तरह से समर्पित खिलाड़ी हैं। दोनों ही टीम के सर्वश्रेष्ठ फील्डर है। लेकिन टेस्ट मैचों से कैरियर की शुरूआत करने के बाद भी टेस्ट के बजाय वन डे टीम के खिलाड़ी का ठप्पा उन पर लग चुका है। अगर हरारे टेस्ट को छोड़ दें तो दोनों ने ही अभी तक सात–सात टेस्ट खेले हैं और उनकी बल्लेबाजी उत्कृष्ट नहीं तो ठीक–ठाक जरूर रही है। युवराज ने 34.88 के औसत से 314 रन और कैफ ने 24.50 के औसत से 294 रन बनाए हैं। दोनों के सामने टेस्ट टीम में स्थान पक्का करने के लिए ही विकल्प है कि वन डे मैचों में बेजोड़ प्रदर्शन करके चयनकर्ताओं का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करें। मोहम्मद कैफ ने तो इस टेस्ट सीरीज से पहले खेली त्रिकोणीय सीरीज में सर्वाधिक रन बनाकर टेस्ट टीम के लिए अपना दावा पक्का किया। वहीं युवराज का प्रदर्शन भी अच्छा रहा। इन प्रदर्शनों से वे टेस्ट टीम में स्थान बनाने में तो सफल हो गये पर अंतिम एकादश में एक ही स्थान खाली होने से कैफ पिछड़ गये।

असल में युवराज सिंह कप्तान सौरव गांगुली की पसंद रहे हैं और मोहम्मद कैफ उप कप्तान राहुल द्रविड़ के चहेते हैं। सौरव युवराज की टेस्ट टीम में जगह बनाने के लिए पाकिस्तान दौरे पर उनसे पारी की शुरूआत भी करा चुके हैं। इस चाहत का ही नतीजा है कि कैफ के बेहतर दावेदार होने पर भी युवराज जिंबाब्वे में टेस्ट में खेल रहे हैं। युवराज और कैफ दोनों ने ही वन डे मैचों में उम्दा प्रदर्शन से खूब वाहवाही लूटी है। युवराज ने 126 मैचों में 31.04 के औसत से 3104 रन बनाए हैं, तो मोहम्मद कैफ ने 97 मैचों में 35.10 के औसत से 2317 रन बनाए हैं। युवराज के नाम चार और कैफ के नाम एक शतक है। पर इस सबके बावजूद दोनों ने ही एक आदि मैचों को छोड़कर अकेले दम मैच जिताने की क्षमता नहीं दिखाई है और किसी भी खिलाड़ी के उत्कृष्ट की श्रेणी में आने के लिए यह क्षमता होना जरूरी है।

युवराज यदि अपनी आलराउंडर के तौर पर धाक बना पाते, तो उनकी जगह बन सकती थी। लेकिन वे अपनी स्पिन गेंदबाजी का प्रभाव कभी नहीं छोड़ पाये। इसलिए आमतौर पर उनसे गेंदबाजी कभी–कभार ही कराई जाती है। उन्होंने यदि अच्छे स्पिनर की छवि बनाई होती, तो एक स्पिनर को बैठाकर उन्हें खिलाया जा सकता था। पर वह इस जिम्मेदारी को उठाने में असफल रहे हैं। 'मोहम्मद कैफ' ने एक बार मुलाकात में कहा था कि मुझे जब भी मौका मिला, तो इतने नीचे भेजा गया कि मेरे पास करने के लिए कुछ बचता ही नहीं था। उन्हें जब–जब ऊपर भेजा गया, अच्छी पारी खेली। लेकिन उच्च क्रम में उन्हें स्थाई तौर पर कभी स्थापित नहीं किया गया है। राहुल द्रविड़ ने पांच साल पहले मोहम्मद कैफ की प्रतिभा को पहचान कर कहा था– 'मोहम्मद कैफ' भविष्य के खिलाड़ी हैं। इससे यह तो साफ है कि इस समय वे देश के सर्वश्रेष्ठ प्रतिभावान खिलाड़ी हैं, इसलिए उन्हें चाहिए कि किसी गुट का होने का अपने ऊपर ठप्पा लगवाने के बजाय अपनी कमियों को दूर करके अपने प्रयासों को जारी रखें।''

दर्शकों की दिलचस्पी और उनके शौक के कारण भी कई स्थान महत्वपूर्ण हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, हॉकी में भोपाल और पंजाब, फुटबॉल में कलकत्ता आदि। इसी तरह इटली का नाम भी फुटबॉल के साथ जुड़ा है। एक उदाहरण देखें। 24 जून, 1990 के **साप्ताहिक हिंदुस्तान** में छपे चरणपाल सिंह सोबती के फीचर का शीर्षक है : **'मेजबान इटली का, फुटबॉल इतिहास : जहाँ फुटबॉल एक धर्म है –**

''एक फुटबॉल विशेषज्ञ ने ठीक पहचाना है कि इटली के नक्शे को देखकर किसी पैर या जूते की शक्ल याद आती है। शायद यही कारण है कि यह देश पैर से खेले जाने वाले फुटबॉल के खेल में आज विश्व के कुछ सबसे सफल और जोरदार देशों में से एक है। ब्राजील के अतिरिक्त इटली एकमात्र देश है जो विश्व कप जैसे महत्वपूर्ण टूर्नामेंट को तीन बार जीत चुका है।''

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) खेलकूद से संबंधित फीचर की कुछ प्रमुख विशेषताएं बताइए। उत्तर लगभग पाँच पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

....

2) खेल–आधारित फीचर और प्रतियोगिता फीचर में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

3) निम्नलिखित विषयों पर लिखे गए फीचर किस श्रेणी में आएँगे और क्यों?

क) हॉकी के जादूगर ध्यानचंद

ख) खेल पत्रकारिता के बदलते तेवर

ग) डेविस कप में भारत की चुनौती

घ) शतरंज के दाँवपेंच

10.4 विषय का चयन

खेल फीचर के प्रकार के अंतर्गत हमने खेल फीचर को विभिन्न वर्गों में रखकर देखा आइए, अब लेखन–कार्य में कौन–सा विषय आपके लिए उपयोगी हो सकता है, और

आपको विषय के चयन के समय किन बातों का ध्यान रखना है, उस पर भी चर्चा कर ली जाए। इसके लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना होगा –

- रुचि और विशेषज्ञता
- प्रकाशन की प्रकृति
- विषय की प्रासंगिकता

10.4.1 रुचि और विशेषज्ञता

यह बात स्पष्ट है कि खेल फीचर के विषय का चयन करते हुए अपनी रुचि का ध्यान अवश्य रखें। केवल रुचि ही काफी नहीं है, उसमें आपकी अधिक विशेषज्ञता भी उपयोगी रहेगी। उदाहरण के लिए, आप क्रिकेट पर फीचर लिख रहे हैं तो आपको इस खेल की पूरी जानकारी होनी चाहिए, साथ ही आपको रन, रन अप, हेट्रिक, एल. बी.डब्लू., हिट विकेट आदि शब्दों का ज्ञान भी होना चाहिए। खेल और खिलाड़ी संबंधित प्रतियोगिता के बारे में जानकारी महत्वपूर्ण है। फिर क्रिकेट आँकड़ों का खेल है। खेल से संबंधित आँकड़े आपके लिए उपयोगी रहेंगे। इसी प्रकार अन्य खेलों से संबंधित आपकी रुचि और विशेषज्ञता विषय चयन को अधिक आसान बना सकती है रेडियो सुनना, समाचार–पत्र, खेल पत्रिकाओं, खेल पुस्तकों को पढ़ना इसके अतिरिक्त खेल के दौरान आपका खुद मैदान में उपस्थित रहना बहुत आवश्यक है।

10.4.2 प्रकाशन की प्रकृति

यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि फीचर किस पत्र–पत्रिका के लिए लिखा जा रहा है अर्थात् इसे दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित होना है, साप्ताहिक विशेषांक में या किसी खेल पत्रिका में। प्रकाशन की प्रकृति के अनुसार ही विषय का चयन उपयोगी रहता है क्योंकि इसके अनुसार आपके लेखन में भी परिवर्तन आ सकता है। दैनिक समाचार पत्र के लिए जो बातें महत्वपूर्ण होंगी, वे हैं :

- तात्कालिकता
- ताजे से ताजे परिणाम
- संक्षिप्तता।

इसका कारण यह है कि दैनिक समाचार पत्रों में स्थान की कमी होती है और बहुत आवश्यक होने पर ही फीचर के लिए स्थान मिल पाता है। अतः इस प्रकार के फीचर में समसामयिकता और तात्कालिकता को ध्यान में रखना होता है।

साप्ताहिक विशेषांक या अन्य पत्रिकाओं में खेल स्तंभ के लिए अधिक स्थान रहता है। इसलिए विषयों के चयन में जो बातें महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं :

- विषय का स्थायी महत्व
- भाषा की चुस्ती और पैनापन
- घटनाक्रम की जानकारी
- संकलित सामग्री का बेहतर उपयोग

10.4.3 विषय की प्रासंगिकता

विषय की प्रासंगिकता से तात्पर्य दरअसल ऊपर बताई गई दोनों बातों से है। दैनिक पत्रों में तात्कालिकता का महत्व अधिक है तो साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाओं में स्थायित्व का। इसका प्रभाव विषय के चयन पर पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, समाचार पत्र में किसी खेल मैदान या स्टेडियम पर लिखे फीचर को स्थान मिल पाना मुश्किल है। किंतु किसी आकस्मिक दुर्घटना के समय उसी मैदान या स्टेडियम पर लिखे फीचर की महत्ता दैनिक समाचार पत्र के लिए बढ़ जाएगी। इसी प्रकार किसी बड़े और नामी खिलाड़ी की पुण्यतिथि पर लिखे गए फीचर को खेलकूद से संबंधित पत्रिका में अधिक आसानी से स्थान मिल सकता है। आमतौर पर सभी पत्र–पत्रिकाएँ खेलकूद का स्थायी स्तंभ रखती हैं, इसलिए यह जरूरी है कि उस पत्र–पत्रिका के पाठकों को और विषय के महत्व को ध्यान में रखते हुए विषय का चयन करें।

10.5 सामग्री का संकलन

फीचर एक प्रकार से तथ्यों पर आधारित रोचक लेख है। इसमें आप तथ्यों को अपनी सृजनात्मक शक्ति और भाषा से सजा–संवार सकते हैं, आकर्षक बना सकते हैं और यहीं फीचर एक 'आम लेख' से भिन्न हो जाता है। इसके लिए तथ्य जुटाने पड़ते हैं। और उन्हें हर प्रकार से रोचक बनाकर आकर्षक स्वरूप प्रदान किया जाता है। आइए देखें, कौन–सी सामग्री फीचर लेखन में सहायक और उपयोगी हो सकती है।

10.5.1 विषय और शोध

जहाँ तक खेल–परिणामों की बात है, तो वे संचार के सभी माध्यमों अर्थात समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन से उपलब्ध हो सकते हैं लेकिन खेल–प्रेमी के लिए मात्र परिणाम ही काफी नहीं होता। पाठक या श्रोता को विषय से संबंधित अनेक जानकारियों की आवश्यकता भी पड़ती है, जिन्हें आपको अपने प्रयासों से एकत्र करना होगा।

उदाहरण के लिए, भारतीय हॉकी टीम के किसी मैच पर फीचर लिखना है जिसमें कप्तान का खेल उल्लेखनीय रहा है और उसने गोल भी किया है। यह समाचार आपको संचार के अन्य माध्यमों से भी मिल सकता है किंतु विस्तृत जानकारी के लिए मैच देखना उपयोगी होगा। मैच देखते समय यह नोट करें कि शाहिद ने खेल की कौन–सी नीति अपनाई है? क्या उसने छोटे–छोटे 'पास का गेम' खेला? क्या डी" के ऊपर गोल के लिए तुरंत प्रयास किए? विपक्षी टीम के खिलाड़ी उसके बेहतर प्रदर्शन को कितना महत्व दे रहे थे? या वह बिना "चेक' किए ही रह गया था? उसने आक्रमण में योजनाएँ भी बनाईं या केवल अच्छे ''पास" का उपयोग ही कर सका? क्या वह अवसर पड़ने पर सुरक्षा के लिए अपनी टीम को सहयोग दे सका? आपका यह सूक्ष्म अवलोकन आपकी रचना में रंग भर देगा। लेकिन कप्तान के खेल पर ही आपकी टिप्पणियाँ काफी नहीं हैं। आपको अन्य जानकारियाँ भी जुटानी पड़ेंगी। कप्तान के इस मैच के गोल के अतिरिक्त उसके अपने व्यक्तिगत कुल गोल कितने हो गए हैं? मैच के परिणाम से भारतीय टीम की स्थिति कितनी मजबूत हुई है? इस खेल के बाद भारतीय टीम से जुड़ी आशाओं का उल्लेख भी किया जा सकता। है। मैच के फोटो मिल सकें और विशेष रूप से कप्तान के गोल करते समय का, तो फीचर और आकर्षक बन सकता है।

इन सभी बातों के लिए प्रयास करने होते हैं। उदाहरण के लिए, क्रिकेट में खिलाड़ियों के बनाए रनों का रिकॉर्ड आसानी से उपलब्ध हो जाता है और आँकड़े विभिन्न माध्यमों द्वारा सभी पिछले रिकार्डों के साथ भी उपलब्ध रहते हैं जबकि हॉकी में खिलाड़ी के व्यक्तिगत गोलों का रिकॉर्ड रखने का प्रचलन नहीं है। आपको या तो यह रिकॉर्ड स्वयं रखना होगा या जो संस्थाएँ मैच आयोजित करा रही हों, उनसे संपर्क करना होगा। इस प्रकार, कुछ सुझाव आपके शोध के लिए उपयोगी हो सकते हैं :

- अपने पसंदीदा खेलों पर लेखन कार्य करें।
- खेलों में अपनी जानकारी, उनकी पूर्व और भविष्य की प्रतियोगिताओं की जानकारी रखें।
- खिलाड़ियों के खेल प्रदर्शन पर अपने पठन और दीगर स्रोतों द्वारा पैनी नजर रखें।
- हो सके तो स्वयं खेल देखने का प्रयास करें।
- दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ अवश्य नोट करते रहें।

10.5.2 तथ्यों का संकलन

तथ्यों के संकलन के लिए हमें संचार माध्यमों की सहायता लेनी पड़ेगी। रेडियो और दूरदर्शन पर समाचारों के अतिरिक्त विभिन्न समीक्षाएँ, टिप्पणियाँ, भेटवार्ताएँ और नियमित खेल कार्यक्रम भी प्रसारित होते रहते हैं। इन सभी कार्यक्रमों को नियमित रूप से सुनते–देखते रहना चाहिए। उनसे प्राप्त जानकारी को किसी डायरी वगैरह में रखने की आदत डालें। दैनिक/साप्ताहिक/मासिक पत्र–पत्रिकाओं को भी संभाल कर रखें। तथ्यों को शामिल करने से आलेख में जान आ जाती है और यह सुरक्षित रखने की तुलनात्मक दृष्टि अधिक कारगर होता है।

पुरानी पत्र–पत्रिकाएँ भी आपको पुस्तकालय से, मित्रों और मिलने वालों से प्राप्त हो सकती हैं। इनमें तथ्य तिथियों और अन्य विवरणों के साथ मिल जाते हैं। पुराने खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों से बातचीत भी यदि आप रिकार्ड करके रख सकें तो वह समय पर उपयोगी हो सकती है।

10.5.3 फोटो

फोटो संकलन की आदत डालना भी आपके लिए जरूरी है। फीचर में फोटो अहम भूमिका निभाते हैं। इसका अनुभव आप किसी भी दिन के समाचार–पत्र को उठा कर देख सकते हैं। आदमी बिना पढ़े भी फोटो और उनके शीर्षक की ओर तुरंत ध्यान देता है। फिर कुछ 'खास क्षणों' के फोटो हमेशा–हमेशा के लिए यादगार बन जाते हैं। जैसे किसी दौड़ाक का 'दौड़' जीतते ही लिया गया फोटो। ऐसे अवसर पर हो सकता है आप भी उस दौड़ाक के साथ बात करते हुए अपना फोटो खिचंवा सकते हैं। उसका एक स्थायी महत्व होता है। किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से बातचीत के समय का फोटो भी आप फीचर के साथ दे सकते हैं। पुरानी पत्र–पत्रिकाओं से भी फोटो संकलित किए जा सकते हैं और उचित अवसर पर उनका उपयोग किया जा सकता है। पटौदी और सोबर्स माने हुए क्रिकेट कप्तान रहे हैं। इनके बीच एक मैच के लिए'टॉस' करता फोटो जिसमें दोनों कप्तान अपने देश के कोट पहने हुए बीच मैदान में ऊपर उछाले हुए सिक्के को देख रहे हैं, आज भी रोमांच पैदा करता है। इसी तरह बिशन सिंह बेदी, वेंकटराघवन और चंद्रशेखर की तिकड़ी स्पिन गेंदबाजी में प्रख्यात

रही। उनकी उस जमाने की गेंदबाजी के ऐक्शन फोटो आज भी युवाओं में जोश और उत्साह भर सकते हैं। ध्यानचंद के हॉकी खेलते हुए फोटो आज भी प्रेरणादायी बन सकते हैं। अतः

- फोटो संकलन की आदत डालें।
- उचित अवसरों के फोटो या उचित अवसरों पर फोटो प्राप्त करने की कोशिश करें।
- किसी बड़े खिलाड़ी या व्यक्ति से बातचीत के दौरान फोटो खिंचवायें।
- खेल भावना और टीम भावना को दर्शाने वाले फोटो प्राप्त करने की चेष्टा करें।
- फोटो के लिए पुराने समाचार पत्र और पुरानी पत्रिकाओं का भी संकलन करें।

10.5.4 साक्षात्कार

साक्षात्कार अपने आप में एक अलग विधा है किंतु खेल फीचर के लिए इसका दायित्व और अधिक हो जाता है। साक्षात्कार करते समय कुछ बातों का खास ध्यान रखना होता है। जैसे, किसी खिलाड़ी से साक्षात्कार करते समय आप उसके खेल के अलावा उसकी शिक्षा, पारिवारिक स्थिति, उसके अन्य शौक की जानकारी भी ले सकते हैं। साक्षात्कार के दौरान उत्तर देते समय खिलाड़ी के हावभाव का उल्लेख कर सकते हैं,

जैसे–उन्होंने 'मुस्कुराकर जवाब दिया', 'उसने लंबी सांस ली', 'उसने अपनी यादों को सजाया आदि। बातचीत करते समय आप आसपास के वातावरण पर भी नज़र रख सकते हैं। ड्राइंग रूम में कौन–कौन सी तस्वीरें थीं, क्या विशेष सामान था। आपकी बातचीत के दौरान यदि कोई अन्य सदस्य भी साथ था तो टिप्पणियाँ, या उसकी दिलचस्पी का उल्लेख आप कर सकते हैं। इससे आपके फीचर में जो जीवंतता आएगी, वह लेखन की एक उपलब्धि होगी।

10.5.5 अन्य स्रोत

सामग्री संकलन के अन्य स्रोत भी हैं जो फीचर के लिए उपयोगी होते हैं। अतः संपर्क में रहना हमेशा लाभप्रद है। दैनिक समाचार, साप्ताहिक, मासिक पत्र, को पढ़ते रहने के अतिरिक्त रेडियो और दूरदर्शन के समाचार और खेल कार्य सुनते–देखते रहना भी जरूरी है। खेल फीचर में आँकड़े और तालिकाएँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसकी खास वजह है :

- तालिकाएँ कम स्थान में अधिक जानकारी देती हैं।
- इनसे एक दृष्टि में जानकारी मिल सकती हैं।
- तुलनात्मक दृष्टि से सामने आती है।
- लेखन को आकर्षक भी बनाती हैं।

10.6 सामग्री का संयोजन और संपादन

कहते हैं, मेजबान की कला अच्छे स्वादिष्ट खानों में कम, उसके परोसने की कला में अधिक है। यही बात फीचर लेखन पर भी लागू होती है। फीचर लिखते समय

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

संकलित सामग्री को हम किस प्रकार संजोते हैं, यह एक कला है। सभी कुछ बेतरतीब लिख देना ही काफी नहीं है।

सामग्री संकलन के बाद हमें फीचर के बुनियादी तत्वों को ध्यान में रखना होगा। क्या फीचर से संबंधित सभी तथ्य प्राप्त हो गए हैं? उससे जुड़ी जानकारियाँ जो दी जा सकती थीं, वे सभी उपलब्ध हैं? जिन तथ्यों को उजागर करना हो उनका अध्ययन करें। फीचर लिखने से पूर्व आप सभी सामग्री का ध्यान से अध्ययन कीजिए। गैर ज़रूरी सामग्री अलग कीजिए। विषय और उद्देश्य के अनुरूप लेखन के लिए एक रूपरेखा बनाइए और फिर उसी के अनुसार अपना लेखन शुरू कीजिए।

बोध प्रश्न –2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) खेलों पर फीचर लिखने के लिए किन बातों को अपनाना जरूरी है। किन्हीं चार बातों का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

2) तालिकाओं के किन्हीं दो लाभों का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

3) फोटो के चयन के समय किन बातों का ध्यान रखना होता है? कोई तीन बातें बताइए।

....

....

....

....

4) खेल फीचर के विषय चयन में कुछ बातें जरूरी होती हैं–सही पर (√) का निशान और गलत पर (x) का निशान लगाइए।

क) विषय में स्वयं की रुचि होना जरूरी नहीं ।

ख) प्रकाशन की प्रकृति महत्वपूर्ण है।

ग) विषय प्रांसगिक होना चाहिए।

घ) खेल में विशेषज्ञता हो, यह आवश्यक नहीं।

5) खेल फीचर के तथ्यों का संकलन के लिए कौन–कौन से स्रोत हो सकते हैं।

....

....

....

....

....

10.7 फीचर का लेखन

फीचर को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है–आरंभ, मध्य और अंत। अर्थात आपके पास जो सामग्री है, उसे तीन भागों में फैलाना होगा। उसे किस तरह संयोजित किया जाएगा, क्या सावधानियाँ रखनी होगी, आइए इसकी चर्चा कर ली जाए ताकि लेखन की कला स्पष्ट हो सके।

10.7.1 आरंभ

आरंभ फीचर का वह महत्वपूर्ण भाग है जिसे पाठक सबसे पहले पढ़ता है और निश्चय करता है कि उस फीचर को पूरा पढ़ना चाहिए या नहीं। लेखों के आकर्षक शीर्षक और आरंभ पाठक को पढ़ने के लिए बाध्य कर देते हैं। कुछ उदाहरणों से आपको स्पष्ट हो जाएगा। **'छोटी–सी बॉल की लम्बी दास्तां'** फीचर का आरंभ देखें –

''विश्व के सबसे पुराने खेलों में से एक है, फुटबॉल का खेल। सीधे से नियम, इस खेल में न के बराबर उपकरणों का इस्तेमाल और थोड़े ही समय में खत्म हो जाने वाले इस मैच के कारण यह खेल लगातार लोकप्रियता पाता रहा। इस खेल की शुरूआत के बारे में इतिहासकारों का नजरिया अलग–अलग है। इतना तय है कि फुटबॉल सबसे पहले इग्लैंड से शुरू हुआ था और 1963 में इस खेल की औपचारिक सैनटेनटों का जश्न बड़े जोर शोर से मनाया गया था। 26 अक्तूबर 1863 को इंग्लैंड में फुटबॉल एसोसिएशन का गठन हुआ था। इस एसोसिएशन ने ही इस खेल को दुनिया भर में लोकप्रिय करने का बीड़ा उठाया।''

उपर्युक्त फीचर के अंश में फुटबॉल के ऐतिहासिक आरंभ के साथ आलेख में पूरी रोचकता लाने का सफल प्रयास किया गया है। कुछ जिज्ञासा और प्रश्न भी दिमाग में स्वतः उठ खड़े होते हैं जो अपने रोमांच के साथ पाठक में आगे की कहानी जानने के लिए उत्सुकता पैदा करते हैं। दरअसल आरंभ को आकर्षक बनाने के लिए कोई भी पद्धति अपनाई जा सकती है, लेकिन तरीका वही होगा जिससे पाठक को आलेख की ओर आकृष्ट किया जा सके।

आरंभ लिखने के लिए कई तरीके हो सकते हैं। आप किसी खिलाड़ी के वक्तव्य से आरंभ कर सकते हैं। विवरणात्मक ढंग से भी आरंभ किया जा सकता है। चाहें तो आप साक्षात्कार के किसी हिस्से से भी आरंभ कर सकते हैं। आरंभ में विषय का संकेत, उसका बोध और आपकी सृजनशीलता का आभास पाठक को होना चाहिए। तभी फीचर का सफल आरंभ तैयार हो सकेगा। आपकी सुविधा के लिए आरंभ के दो उदाहरण हम और दे रहे हैं। **साप्ताहिक हिंदुस्तान** (24 जून, 1990) में प्रकाशित **चौदहवां विश्व कप : अखाड़ा दो दर्जन** दिग्गजों का (लेखक चरण पाल सिह

सोबती) एक से एक उदाहरण देखिए जिसमें विश्व कप चैम्पियनशिप में भविष्य की संभावनाओं से जुड़े सवालों की झड़ी लगाकर पाठकों में लेख के प्रति उत्सुकता और जिज्ञासा पैदा कर दी है।

''विश्व कप के 52 मैचों के बाद फुटबाल चैम्पियन के नाम का पता लगेगा। क्या अर्जेंटीना फिर से विश्व कप चैम्पियन होगा? क्या विश्व कप विजेता फिर से उन्हीं टीमों में से कोई एक होगा जो अब तक विश्व कप जीत चुकी हैं? क्या इस बार विश्व कप को कोई नया विजेता मिलेगा? जीत की एक जोरदार दावेदार टीम ब्राजील के कोच सेबस्टियाओ लैजरोनी का कहना है, 'यह विश्व कप के इतिहास का सबसे संतुलित विश्व कप है। इस बार एक–दो नहीं, कई टीमें जीत की दावेदार हैं।

इसी तरह से हर विश्व कप से कोई न कोई एक हीरो खिलाड़ी सामने आता रहा है–1982 में पालो रोसी और 1986 में डिएगो मेराडोना। इस बार कौन हीरो होगा? क्या फिर से मेराडोना? या हालैंड के रुड गालिट और वैन बैस्टन? या ऐसा कोई खिलाड़ी जिसके बारे में अभी कुछ ज्यादा सुना ही नहीं गया? अब तक खेले जा चुके मैच क्या इस बारे में कुछ इशारा कर रहे हैं?

*एक अन्य उदाहरण देखिए जो **'सपने में सानिया'** शीर्षक फीचर से लिया गया है।*

''एक साल पहले तक जो लड़कियां डांस फ्लोर पर थिरकते हुए पाई गई थीं, उनके कदम आज टेनिस कोर्ट की ओर बढ़ने लगे हैं। जो लड़कियाँ ऐश्वर्य राय बनने का सपना संजोया करती थीं, उनमें सानिया मिर्जा बनने की होड़ मची है। टेनिस की सनसनी सानिया का जादू शहर के टीनएजर्स के सिर में चढ़कर बोल रहा है। वे पूरी तरह सानिया के रंग में डूबी नजर आ रही हैं। स्कूल से लेकर कॉलेज तक की छात्राओं पर टेनिस का बुखार चढ़ चुका है। कॉलेज की जिन छात्राओं में बैटिंग मैस्ट्रो सचिन तेंदुलकर के खेल की चर्चा होती थी, वे आज सानिया का नाम लेते नहीं अघातीं। होस्टल के कमरों की जिन दीवारों पर अन्ना कुर्निकोवा, मारिया शारापोवा या बेकहम के पोस्टर हुआ करते थे, वहां आज सानिया की तस्वीरें टंग चुकी हैं।''

(यशवंत सिंह, सहारा समय, 1 अक्तूबर, 2005)

10.7.2 मध्य

फीचर का वह भाग है जो उसे विस्तार देता है। यह भाग महत्वपूर्ण है। किसी पेड़ की जड़ें उसे मजबूती प्रदान करती हैं और ऊपरी हिस्से की उपयोगिता पत्ते और फल–फूल की वजह से होती है लेकिन पेड़ को सीधा खड़ा तो मध्य भाग यानी उसका तना ही रखता है। फीचर का मध्य भाग भी यही कुछ भूमिका निभाता है। इसे बहुत अधिक विस्तार नहीं देना होता, हाँ, विवरण अधूरा न लगे इसका ध्यान रखना चाहिए। भाषा सरल और शैली आकर्षक हो। आँकड़े और तथ्य देने जरूरी हैं। किंतु आँकड़ों की भरमार से इसे बोझिल नहीं होने देना चाहिए। ।

सही विस्तार देते समय विषय की प्रासंगिकता, उपयोगिता और सामयिकता का ध्यान रखें। विस्तृत फीचर को पत्र–पत्रिका में स्थान मिलना मुश्किल होता है और बहुत छोटा फीचर अगर कुछ जिज्ञासाएँ छोड़ता है तो भी बात नहीं बनती। उदाहरण के लिए एक नए उभरते खिलाड़ी पर जो फीचर तैयार होगा उसे निश्चित ही विश्व कप फुटबॉल या ओलम्पिक पर लिखे फीचर से कम महत्ता मिलेगी। किंतु परिस्थितियाँ विपरीत भी हो सकती हैं। यदि जूनियर खिलाड़ियों की कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगिता

चल रही है, जहाँ उनका चयन राष्ट्रीय टीम या अंतरर्राष्ट्रीय स्तर के महत्वपूर्ण मुकाबलों के लिए होना है और विश्व कप फुटबॉल या ओलम्पिक में अभी लगभग एक वर्ष बाकी है तब जूनियर खिलाड़ी या उनकी प्रतियोगिता पर लिखे फीचर की अधिक उपयोगिता होगी। अर्थात इसका कोई विशेष नियम नहीं है पर जैसा कि हमने कहा, समय का तकाजा और विषय की प्रासंगिकता स्वयं इसका निर्धारण करते हैं। यही बात भाषा, संतुलित आँकड़ों और सामग्री की आकर्षक प्रस्तुति पर भी लागू होती है। नीचे हम दो फीचरों के मध्य भाग के अंश दे रहे हैं। आपको भाषा और सामग्री के जमाव का अंदाज हो सकेगा। सुरेश कौशिक लिखित **'खेलों का खेल है फुटबॉल'** से एक उदाहरण जो 3 जून, 1990 के **'जनसत्ता'** में प्रकाशित हुआ था।

''फुटबॉल की कहानी इतनी अनोखी है कि खेल के हर पहलू को गहराई से समझने को प्रेरित करती है। उस खेल को, जो लोगों के लिए तो उद्योग बन गया है जबकि अनगिनत लोगों के लिए मजहब। और जहाँ इस कप का आयोजन होता है, वहाँ का वातावरण फुटबॉलमय हो जाता है। नाचने–गाने के माहौल से गलियों की रौनक बढ़ जाती है। झंडे, बैनर, कारों के हॉर्न, समुद्री जहाजों के साइरन का शोर, रंग–बिरंगी छटा और मस्ती में लोग अपने को भूल जाते हैं। मरे हुए दिल जीवंत हो उठते हैं। खेल उतार–चढ़ाव और रोमांच को कई बर्दाश्त भी नहीं कर पाते हैं और उनके दिल की धड़कन जवाब दे जाती है।

कौशल के अलग नजारों में सबसे ज्यादा फायदे में रहते हैं गोल बनाने वाले खिलाड़ी। यद्यपि टीम की जीत में हर खिलाड़ी का अपना योगदान रहता है लेकिन गोल करने वाले को ज्यादा प्रसिद्धि मिलती है। गोल करने पर ही तो टीम जीतेगी। और इसी में तो मज़ा है और जब फुटबॉल की बात चलती है तो यह सवाल एकाएक उठता है कि फुटबॉल इतिहास का महान खिलाड़ी कौन है? इसमें पेले को सबसे ऊपर रखा जाता है। वैसे फुटबॉल पंडितों का नज़रिया थोड़ा अलग भी है। गेम को नियंत्रण करने की क्षमता से कुछ, डी स्टीफनों को बढ़िया आल राउंड खिलाड़ी मानते हैं, कुछ का कहना है चरम पर जार्ज बेस्ट के मुकाबले दूसरा कोई नहीं। अलग–अलग राय में पुस्कास, डीन, गालाचार, बेकनबाउर और मैराडोना के नाम आ सकते हैं। लेकिन यह बहस खत्म नहीं होगी जब तक फुटबॉल रहेगी।''

जनसत्ता में ही **21 अगस्त 2005** को सुरेश कौशिक द्वारा लिखित फीचर 'अजूबा वार्न का' के मध्य का एक सुन्दर उदाहरण देखिए –

''बहरहाल उपलब्धियां और विवाद वार्न के करियर की शुरूआत से ही जुड़े हैं। 1992 में श्रीलंका दौरे पर उनके दामन पर पहला दाग लगा था। तब उन्होंने अपने साथी मार्क वॉ के साथ भारतीय सट्टेबाज को जानकारियां उपलब्ध करवाने के लिए पैसे लिए थे। पता चलने पर बाद में आस्ट्रेलियाई क्रिकेट अधिकारियों ने उन पर जुर्माना ठोका था। फिर चार साल बाद आईसीसी ने वार्न पर जुर्माना लगाया। वजह यह थी कि उन्होंने श्रीलंका टीम के अर्जुन राणातुंगा के खिलाफ टिप्पणी कर दी थी। बाद में वे कुछ दूसरे मामलों से भी जुड़े, पर हर बार वे मुश्किल से निकलते रहे। खासियत यह रही कि इन घटनाओं का असर उन्होंने अपनी गेंदबाजी पर नहीं होने दिया। अपनी लय को उन्होंने बिगड़ने नहीं दिया। इसलिए खेल में वापस लौटने पर उनको कभी मुश्किल नहीं आई।

वार्न की यह खूबी उन्हें विश्व का महानतम गेंदबाज बनाती है। उनमें अकेले दस मैच का परिणाम पलटने की क्षमता है। स्पिनर के रूप में उनकी गेंदबाजी जहां नपी–तुली

है, वहीं उसमें पैनापन और विविधता भी है। उनकी यही खासियत उन्हें दूसरे गेंदबाजों से अलग करती है।

वनडे हो या टेस्ट क्रिकेट, शेन वार्न दोनों ही शैलियों में बेजोड़ रहे हैं। महत्वपूर्ण मौकों पर विकेट लेकर उन्होंने मैच का परिणाम आस्ट्रेलिया के पक्ष में किया है। वे सही मायनों में मैच विनर रहे हैं। खासतौर से वन डे मैचों में, जहां गेंदबाजों को ताबड़तोड़ अंदाज में कूटने के लिए बल्लेबाज तैयार रहते हैं। लेकिन उन्होंने अपनी सूझबूझ और चतुराईपूर्ण गेंदबाजी से वनडे में भी स्पिनर की भूमिका को अहमियत दिलाई।'

तस्वीरें फीचर को जीवंत और आकर्षक बनाती है। मध्य भाग को संतुलित और प्रभावी बनाने में तालिकाएं भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाती हैं।

10.7.3 अंत एवं शीर्षक

'अंत' फीचर का तीसरा और अंतिम भाग है। फीचर का किस प्रकार समापन किया जाए कि उसका असर हमेशा के लिए बना रहे? यद्यपि कुछ फीचर विषय की दृष्टि से बहुत स्थायी नहीं होते हैं, फिर भी उसके 'अंत' में दी गई आपकी टिप्पणी, निष्कर्ष उसे प्रभावी बनाए रखते हैं और यही फीचर की सफलता है।

3 जून, 1990 के **'जनसत्ता'** में विश्व कप फुटबॉल को केंद्रित कर सुरेश कौशिक ने **'खेलों का खेल है फुटबॉल'** शीर्षक फीचर का अंत इस प्रकार किया है –

''यों मज़बूत दावा पाँच टीमों–अर्जेंटीना, यूरोपीय चैंपियन नीदरलैंड, मेजबान ब्राज़ील और पश्चिमी जर्मनी का है लेकिन बेल्जियम, यूगोस्लाविया, स्पेन और इंग्लैंड भी सफलता के साथ जुट सकती हैं। लेकिन निर्णायक भूमिका माराडोना, एडगुलिट, मारको वान बेस्टेन जैसे सुपर स्टार खिलाड़ी निभाएंगे। कोई नया सितारा भी आश्चर्यजनक प्रदर्शन से अपनी टीम को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकता है। सभी पुरानी चर्चाएँ और यादें एक इतिहास बनकर रह जायेंगी। जब 8 जून को इटली में 24 टीमों में विश्व चैंपियन बनने की जंग शुरू होगी, विश्व की फुटबॉल शक्तियाँ उन उभरते हुए देशों की टीमों से खेलेंगी जो नई पहचान बनाने की कोशिश में रहेंगी और जब एक महीने वह फुटबॉल मेला समाप्त होगा तो शायद लातिन अमेरिका या यूरोप की ही किसी टीम को विश्व चैंपियन का सेहरा बंधेगा।''

उपर्युक्त उदाहरण से एक बात और स्पष्ट है कि अंत में निष्कर्ष निकालने के लिए और अपना अनुमान बनाने के लिए समीक्षात्मक दृष्टि समृद्ध होनी चाहिए।

अक्सर खेल फीचर में अंत को इतना महत्व नहीं देते हैं और विवरण के साथ ही फीचर को भी खत्म करते हैं।

कुल मिलाकर फीचर में अंत को भी महत्व दिया जाना चाहिए पर फीचर का अंत कोई न कोई निष्कर्ष, अनुमान या संदेश लिए हुए हो तो बेहतर है। अंत में **'अपराजित चैंपियन का रहस्य'** शीर्षक से 8 फरवरी, 1986 की **'खेल हलचल'** में छपे फीचर का यह उदाहरण देखें जिसमें खिलाड़ी के शीर्ष स्थान पर पहुंचकर हटने से मिलने वाली इज्जत का संदेश छुपा हुआ है।

''दो वर्ष बाद ही हर्ब ने रोम ओलम्पिक में 1500 मीटर की दौड़ रिकार्ड समय में जीत ली और यही दौड़ उसकी अंतिम दौड़ सिद्ध हुई। अब वे शादी कर चुके थे और पिता

बन चुके थे। उनकी जिम्मेदारियाँ भी अब बढ़ चुकी थीं। हर्ब स्टेडियमों की चकाचौंध भूलकर उच्च अध्ययन के लिए कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी चले गए। उन्हें इस बात का संतोष था कि अपराजित रहकर ही उन्होंने निवृत्ति की घोषणा की। ऐसे कम ही खिलाड़ी होते हैं जो कैरियर के शीर्ष पर होते हुए निवृत्ति की घोषणा कर देते हैं। मगर हर्ब इलियट एक अलग किस्म का था।''

खेल फीचर का शीर्षक भी आकर्षक होना चाहिए। उनमें विषय का संकेत और फीचर के केन्द्रीय भाव का उल्लेख भी होना चाहिए।

10.7.4 भाषा और शैली

खेल फीचर अपनी भाषा और शैली के कारण अन्य फीचर से भिन्न हो जाता है। रन अप, स्कोर, गोल, पेनाल्टी कॉर्नर, एल.बी.डब्ल्यू, हिट विकेट, लॉबी, स्मैश, हैटट्रिक आदि ऐसी शब्दावली खेलों के लिए प्रयुक्त होती है।

फीचर शैली की विशेषता यह है कि वह सादगीपूर्ण हो, समझ में आने लायक हो, किंतु यथार्थ को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत कर सके। सही शैली पाठकों में विश्वास उत्पन्न करती है जो एक बड़ी सफलता है। शब्दों का अनुचित चयन, भाषा और शैली दोनों को बिगाड़ता है। एक उदाहरण देखें –

''वहीं भारत–पाकिस्तान श्रृंखला में 'पेनाल्टी कार्नर जल्लाद' के रूप में प्रतिष्ठित रोहिंदर पाल इस स्पर्धा में बौने साबित हुए। उक्त उदाहरण में शब्द 'जल्लाद' और 'बौने' अनुपयुक्त लगते हैं और दोनों में तालमेल का भी अभाव है। ऐसे अवसर पर केवल 'पेनल्टी कार्नर–विशेषज्ञ' लिखना उचित था। 'बौने' की जगह 'नाकाम' लिखना बेहतर रहता।''

कभी–कभी आम बोलचाल में जो शब्द खेलों से जुड़े नहीं दिखते थे वे भी खेल फीचर के लिए कहीं उपयुक्त बन जाते हैं और इन शब्दों के मायने कुछ के कुछ हो जाते हैं। उदाहरण के लिए –

''भारतीय हॉकी की दुर्दशा से है जो काफी घायल अवस्था में है।''

इसमें घायल का तात्पर्य हॉकी की दुर्दशा से है, किंतु इस उदाहरण में दुर्दशा से कहीं अधिक 'घायल' शब्द उपयुक्त लगता है।

एक अन्य उदाहरण में भाषा की जटिलता देखें –

''कई वर्ष बाद इस वर्ष यह कहा जा सकता है कि तीनों प्रमुख टीमों की ताकत कम अधिक एक समान है।''

यहाँ 'ताकत कम अधिक एक समान' कहने से कोई भी अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

खेल फीचर में तकनीकी शब्दावली का सावधानीपूर्वक इस्तेमाल करें। विभिन्न खेलों के अपने तकनीकी शब्द होते हैं। खेल के तकनीकी पक्ष की सही जानकारी के बिना आप इन शब्दों का उपयुक्त ढंग से इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे। इसके लिए जरूरी है कि आप खेलों को ध्यानपूर्वक देखें और उनके इस पक्ष पर विशेष ध्यान दें। इसीलिए खेल फीचर में भाषा और शैली पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) फीचर को आरंभ करने के तीन तरीके बताइए।

....

....

....

....

....

2) फीचर के मध्य भाग को विस्तार देने के लिए किन बातों पर ध्यान देना जरूरी है?

....

....

....

....

....

10.8 शब्दावली

रन: क्रिकेट के दो विकेट के बीच 22 गज की दूरी का फासला जिसे दौड़कर पूरा करने पर एक रन बनता है। मैच के अंत में रनों के आधार पर ही हार–जीत का निर्णय होता है।

एमेच्यर: अव्यवसायी, शौकीन।

लीग कम नॉक आउट : लीग पद्धति में हर टीम एक–दूसरे से मैच खेलती है। नॉकआउट पद्धति में हारने वाली टीम प्रतियोगिता से बाहर होती जाती है।

पिच: क्रिकेट खेलने की पट्टी।

हेट्रिक : लगातार तीन बार।

एल.बी.डब्ल्यू : पगबाधा, क्रिकेट में यदि विकेट पर जाती हुई गेंद पैरों से लगे तो खिलाड़ी एल.बी.डब्ल्यू. आउट दिया जाता है।

हिट : शॉट ।

पास : गेंद आगे बढ़ाना।

डी : हॉकी में मैदान का विशेष क्षेत्र जहाँ से गोल किया जाता है।

सैनेटेनरीचूरी : 100 वर्ष।

लॉन्ग शॉट : गेंद को उछाल कर मारना।

पेनाल्टी कार्नर : हॉकी में बैंक लाइन से 25 गज के क्षेत्र में किसी भी नियम के भंग होने पर विरोधी टीम को पेनाल्टी कार्नर दिया जाता है। इसमें उस टीम का एक खिलाड़ी बैंक लाइन से गेंद को स्ट्राइकिंग सर्कल के ऊपर साथियों के पास फेंकता है और उन्हें विरोधी टीम के केवल पाँच खिलाड़ियों के विरुद्ध गेंद को गोल बाक्स में पहुंचाना होता है।

10.9 सारांश

- फीचर, लेखन की एक आकर्षक शैली है और खेलकूद पर फीचर लेखन से कई लोगों ने प्रसिद्धि हासिल की है। केवल अच्छे फीचर ही ऐसी धरोहर होते हैं जो लंबे समय तक दिलचस्पी कायम रखते हैं। इस इकाई में खेल फीचर के अभिप्राय को स्पष्ट करने के साथ–साथ उसके विषय का चुनाव किस प्रकार किया जाए, यह बताया गया है।

- इसके लिए खेल फीचर के प्रकारों की जानकारी दी गई है। किसी खेल, खिलाड़ी, या किसी प्रतियोगिता के अतिरिक्त भी आप कोई और विषय चुन सकते हैं। पैसे, खेलों से जुड़ी विभिन्न हस्तियों–अम्पायर, खेल कमेंटेटर आदि तथा किसी विशेष खेल संस्थान या मैदान या स्टेडियम पर भी फीचर लिखे जा सकते हैं।

- कौन–सा विषय आपके लिए उपयोगी रहेगा, इस संबंध में आपकी रुचि और विषय की प्रासंगिकता को महत्वपूर्ण बताया गया है। फीचर लेखन के लिए सामग्री संकलन एक महत्वपूर्ण कार्य है। विषय से जुड़े तथ्य, फोटो, विभिन्न साक्षात्कार और आपका अपना शोध, लेखन को आसान और रुचिकर बना सकता है।

- सामग्री को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाए, इसके लिए फीचर के तीन मुख्य भागों आरंभ, मध्य और अंत की भी बात हुई है। इसके अतिरिक्त फीचर की भाषा–शैली पर विचार किया गया है। भाषा सरल हो, उसमें गति, प्रवाह हो, पैनापन और शैली रोचक और आकर्षक हो, जिससे फीचर तथ्यों और आंकड़ों की वजह से बोझिल न लगे।

- आशा है, इस इकाई को पढ़ने के बाद आप खेल फीचर लेखन की ओर प्रवृत्त होंगे और यह इकाई उसमें मददगार सिद्ध होगी।

अभ्यास

1) आपको जो खेल प्रिय हो, उससे संबंधित किसी अनुभव का उल्लेख कीजिए। यह उल्लेख खिलाड़ी या दर्शक, किसी भी रूप में हो सकता है उत्तर दस पंक्तियों से अधिक न हो।

....

....

....

....

2) आपको अपने शहर की फुटबॉल प्रतियोगिता पर फीचर लिखने के लिए सामग्री एकत्र करनी है। बताइए कि आप क्या–क्या सामग्री एकत्र करेंगे?

....

....

....

....

....

3) किसी प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी पर फीचर लिखने के लिए आप क्या तैयारी करेंगे?

....

....

....

....

....

....

4) अपने नगर में आयोजित किसी खेल प्रतियोगिता को देखें तथा उसके विवरण के आधार पर एक फीचर तैयार करें (लगभग 200 शब्दों में)।

....

....

....

....

....

....

5) मुहम्मद कैफ या सानिया मिर्जा के खेल जीवन पर लगभग 15 पंक्तियों में एक फीचर लिखिए। इसके लिए पुस्तकालयों में उपलब्ध सामग्री का उपयोग करें और फीचर में खिलाड़ी का संक्षिप्त परिचय, खेल जीवन, उसकी उपलब्धियाँ, खेल तकनीक की विशेषता को भी अवश्य शामिल करें।

....

....

....

....

....

....

6) उपर्युक्त फीचर लेख का उचित शीर्षक दें।

10.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) उसमें खेल के नियम और तकनीकी पक्ष का ध्यान रखना होता है।
   ii) खेल से संबंधित आँकड़ों का ध्यान रखना होता है।
   iii) खेल की खास शब्दावली में पारंगत होना होता है।
2) खेल आधारित फीचर में खेल के संबंध में परिचयात्मक विवरण दिया जाता है जबकि प्रतियोगिता में खेल से संबंधित प्रतियोगिता को विषय बनाया जाता है।
3) क) खिलाड़ी आधारित क्योंकि इस फीचर के केंद्र में ध्यानचंद होंगे।
   ख) अन्य खेल फीचर के अंतर्गत क्योंकि यह शेष तीनों प्रकारों से संबद्ध नहीं है।
   ग) प्रतियोगिता आधारित–डेविस कप, टेनिस से संबंधित।
   घ) अंतरराष्ट्रीय खेल आधारित–शतरंज के खेल के बारे में।

बोध प्रश्न 2

1) i) रुचि और जानकारी वाले खेलों का चयन।
   ii) फोटो संकलन की आदत।
   iii) पुराने महत्वपूर्ण लेख और तालिकाओं का संकलन।
   iv) संभव हो तो मैच अथवा प्रतियोगिता स्वयं देखना।
2) i) तालिकाओं से तुलनात्मक आँकड़े प्राप्त होते हैं।
   ii) इनसे फीचर में आकर्षण बढ़ता है।
3) कम जगह में ज्यादा सूचना दी जा सकती है।
   i) फोटो महत्वपूर्ण व्यक्ति के हों।
   ii) विशेष अवसर के हों।
   iii) फोटो ध्यान आकर्षित करने वाले हों।
4) क)x ख) √ ग) घ) x
5) i) रेडियो ii) दूरदर्शन iii) पत्र–पत्रिकाएँ iv) पुस्तकें v) स्वयं खेल का मैदान जहाँ खेल हो रहे हों।

बोध प्रश्न 3

1) i) किसी समीक्षक या खिलाड़ी के वक्तव्य से ।
   ii) किन्हीं जिज्ञासु और उत्सुकतापूर्ण प्रश्नों से।
   iii) विवरणात्मक ढंग से।
2) i) सामग्री का जमाव आकर्षक ढंग से किया जाए।
   ii) भाषा सरल और शैली रोचक हो।
   iii) भाषा सरल संतुलित आँकड़े सम्मिलित किए जाएँ।

अभ्यास

1) उत्तर स्वयं लिखिए।
2) i) प्रतियोगिता का परिचय और इतिहास

ii) प्रमुख टीमों और खिलाड़ियों का विवरण

iii) प्रतियोगिता पर आपके अनुमान और निष्कर्ष

3) i) खिलाड़ी का परिचय प्राप्त करना

ii) उसकी उपलब्धियों के आँकड़े प्राप्त करना

iii) उसकी खेल तकनीक की विशेषता, अन्यों से तुलना के लिए सामग्री एकत्र करना।

iv) उससे बातचीत करना और अन्य विशेषज्ञों की राय लेना।

4) 5) और 6) का उत्तर आप स्वयं लिखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY